

अ. 1. 18

पत्रावली देखा है। कभीकालें पत्रों उत्तरे अधिकाधिक
काज भी उप. वही है। दोस्तों भी अनुपस्थित।
अपनाई व उत्तरे अधिकाधिक को 2. 3 घाट कापाज.
दिल्ली वही लेकिन कोई उपस्थित नहीं दुष्टे।
प्रतिअधिकपत्रावली कदा हाथीनी कदा वही अपाका
के स्वार्थ की जाती है। पत्रावली निरीक्ष सुभास
होकर बाद ताकिल वसनीत हाथीत वपर
है।

↓

दिल्ली सं. 18/18